ज्ञान शांति मैत्री

**महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा**

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

**जनसंपर्क कार्यालय**

**PUBLIC RELATIONS OFFICE**

आज़ादी का अमृत महोत्सव

## विनोद कुमार शुक्ल की साहित्य सम्पदा प्रेरणास्त्रोत : प्रो. कुमुद शर्मा

## हिंदी विवि ने शुक्ल को दी श्रद्धांजलि

**वर्धा, 24 दिसंबर 2025 :** महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में वरिष्ठ साहित्यकार श्री विनोद कुमार शुक्ल को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि शुक्ल का निधन साहित्य जगत के लिए दुखदायी घटना है। अनवरत लिखने वाले लेखक की कलम अचानक थम गयी है। वे हम सब के बीच शब्दों के माध्यम से जीवित रहेंगे। उनकी साहित्य सम्पदा सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत है। विश्वविद्यालय की ओर से बुधवार, 24 दिसंबर को शुक्ल को ऑनलाइन माध्यम से श्रद्धांजलि दी गयी। इस अवसर पर दो मिनट का मौन रख कर उनके परिवार को आत्मिक बल एवं शक्ति प्रदान करने की कामना की गयी।

विदित है की हिंदी साहित्य के शिखर पुरुष विनोद कुमार शुक्ल (88) लंबे समय से अस्वस्थ थे। उन्होंने मंगलवार, 23 दिसंबर को एम्स, रायपुर में अंतिम सांस ली। 21 नवंबर को ही उन्हें साहित्य के सर्वोच्च सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से नवाजा गया था। छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव में 01 जनवरी 1937 को जन्मे शुक्ल हिंदी साहित्य की उस दुर्लभ विधा के लेखक थे, जो बिना शोर किए बहुत दूर तक सुनाई देती है। उनकी रचनाएं जीवन के साधारण क्षणों में असाधारण अर्थ खोज लेती थी।

'लगभग जय हिन्द' उनका पहला कविता संग्रह 1971 मे प्रकाशित हुआ। उनकी रचनाएं 'वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह', 'सब कुछ होना बचा रहेगा', 'कविता से लंबी कविता', 'आकाश धरती को खटखटाता है' जैसी कृतियां हिंदी कविता की दिशा बदलने वाले मील के पत्थर बनीं। गद्य में भी उनकी उपस्थिति उतनी ही प्रभावशाली रही। 1979 में आया उपन्यास 'नौकर की कमीज', जिस पर मणि कौल ने फिल्म बनाई, हिंदी उपन्यास की भाषा और दृष्टि को नई जमीन देता है। 'खिलेगा तो देखेंगे', 'दीवार में एक खिड़की रहती थी', 'एक चुप्पी जगह' जैसे उपन्यासों और 'पेड़ पर कमरा', 'महाविद्यालय', 'घोड़ा और अन्य कहानियां' जैसे कहानी संग्रहों ने उन्हें साहित्य का अनिवार्य नाम बना दिया। उनकी रचनाएं कई भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनूदित हुई हैं। विनोद कुमार शुक्ल को साहित्य अकादमिक पुरस्कार, गजानन माधव मुक्तिबोध फेलोशिप, रजा पुरस्कार, शिखर सम्मान, राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, दयावती मोदी कवी शेखर सम्मान, हिंदी गौरव सम्मान और 2023 में पैन-नाबोकोव जैसे पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया।

**पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत**

**ई-मेल/E-mail:** pro.mgahv@hindivishwa.ac.in **वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org**

**दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305**

ज्ञान शांति मैत्री

**महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा**

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

**जनसंपर्क कार्यालय**

**PUBLIC RELATIONS OFFICE**

आज़ादी का अमृत महोत्सव

## विनोद कुमार शुक्ल यांचे साहित्य प्रेरणास्त्रोत : प्रो. कुमुद शर्मा

## हिंदी विश्वविद्यालयात शुक्ल यांना श्रद्धांजली

**वर्धा, 24 डिसेंबर 2025 :** महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदीविश्वविद्यालयात ज्येष्ठ साहित्यिक श्री विनोद कुमार शुक्ल यांना श्रद्धांजली अर्पण करताना कुलगुरू प्रो. कुमुद शर्मा म्हणाल्या की शुक्ल यांचे निधन हे साहित्यविश्वासाठी अत्यंत दुःखद घटना आहे. अखंड लिहिणाऱ्या लेखकाची लेखणी अचानक थांबली आहे. मात्र ते आपल्या शब्दांच्या माध्यमातून सदैव आपल्यामध्ये जिवंत राहतील. त्यांची साहित्यसंपदा सर्वांसाठी प्रेरणास्त्रोत आहे. विश्वविद्यालयाच्या वतीने बुधवार, 24 डिसेंबर रोजी ऑनलाइन माध्यमातून शुक्ल यांना श्रद्धांजली अर्पण करण्यात आली. या प्रसंगी दोन मिनिटांचे मौन पाळून त्यांच्या कुटुंबीयांना आत्मिक बळ व शक्ती मिळावी, अशी प्रार्थना करण्यात आली.

विदित आहे की हिंदी साहित्याचे शिखरपुरुष विनोद कुमार शुक्ल (वय88) दीर्घकाळ आजारी होते. मंगळवार, 23 डिसेंबर रोजी रायपूर येथील एम्स रुग्णालयात त्यांनी अखेरचा श्वास घेतला. 21 नोव्हेंबर रोजीच त्यांना साहित्याच्या सर्वोच्च 'ज्ञानपीठ पुरस्काराने' सन्मानित करण्यात आले होते. छत्तीसगडमधील राजनांदगाव येथे 1 जानेवारी 1937 रोजी जन्मलेले शुक्ल हे हिंदी साहित्याच्या दुर्मिळ परंपरेतील लेखक होते।

'लगभग जय हिंद' हा त्यांचा पहिला कविता संग्रह 1971 मध्ये प्रकाशित झाला. 'वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह', 'सब कुछ होना बचा रहेगा', 'कविता से लंबी कविता', 'आकाश धरती को खटखटाता है' यांसारख्या त्यांच्या काव्यकृतींनी हिंदी कवितेची दिशा बदलविली. गद्य लेखनातही त्यांची उपस्थिती तितकीच प्रभावी होती. 1979 मध्ये प्रकाशित झालेल्या 'नौकर की कमीज' या कादंबरीवर मणी कौल यांनी चित्रपट निर्माण केला, ज्यामुळे हिंदी कादंबरीच्या भाषेला व दृष्टिकोनाला नवे परिमाण मिळाले. 'खिलेगा तो देखेंगे', 'दीवार में एक खिड़की रहती थी', 'एक चुप्पी जगह' या कादंबऱ्या तसेच 'पेड़ पर कमरा', 'महाविद्यालय', 'घोड़ा और अन्य कहानियां' हे कथासंग्रह त्यांना साहित्यविश्वातील अनिवार्य नाव बनवतात.

त्यांच्या साहित्यकृती अनेक भारतीय व विदेशी भाषांमध्ये अनुवादित झाल्या आहेत. विनोद कुमार शुक्ल यांना साहित्य अकादमी पुरस्कार, गजानन माधव मुक्तिबोध फेलोशिप, रजा पुरस्कार, शिखर सन्मान, राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सन्मान, दयावती मोदी कवी शेखर सन्मान, हिंदी गौरव सन्मान तसेच 2023 मध्ये पॅन-नाबोकोव पुरस्कार यांसह अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारांनी सन्मानित करण्यात आले होते.

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष :+91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305